

भाव चित्रावली

श्रीधरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

Copyright strictly reserved by the Author

मूल्य ४) रात्रमस्करण ६)

प्रकाशक •

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,
१२६, हरिमन रोड, कलकत्ता

प्रकाशक—

महावीरप्रसाद पोद्दार

स्थापक—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता

से बंगला और अंगरेजी संस्करण
भी मिलते हैं ।

बंगला और अंगरेजी संस्करणोंके

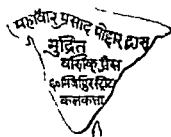
प्रकाशक—

आनन्दभण्डार पब्लिशिंग हाउस

२७, सुकिया स्ट्रीट

यहां हिन्दी संस्करण भी
मिलता है ।

मोटर—



चित्र—

श्री० राय प्रसाद सक्सेना

वक्तव्य



इस पुस्तकके कुछ चित्र पहले पहल बङ्गभाषाके सुप्रसिद्ध मासिक पत्र “भारतवर्ष”में प्रकाशित हुए थे। लोगोंने उन्हें खूब पसन्द किया, चारों ओरसे प्राप्त हुए हान लगा कि ये चित्र पुस्तकाकार निकलने चाहिए। आनन्द भण्डारने इस कार्य भारको सानन्द ग्रहण किया। भाषे अभिव्यक्तिके नामसे बङ्गला और Expressions & Calligraphies के नामसे अंग्रेजी मस्करण प्रकाशित किया। आनन्द भण्डारने उन दोनों मस्करणोंको सर्वांग सुन्दर बनानेमें जो परिश्रम और चेष्टा का है उसके लिये वह मेरे हार्दिक धन्यवादका पात्र है।

आनन्दजी बात है कि बङ्गसमाज तथा अंग्रेज जनताने पुस्तकोंका आशक्तीत आदर किया। वंश बड़े विद्वानोंने उनकी सराहना की, अंग्रेजी तथा बङ्ग-भाषाके नामी नामी पत्रोंने अपने कालमें प्रशंसापूर्ण लेख लिखे।

हमलोग राष्ट्रभाषा हिंदीमें भी एक मस्करण निकालना चाहते थे। इसी समय कलकत्तेके सुविन्यास प्रकाशक “हिन्दी पुस्तक एजेंसी” तथा “युनिक्वैप्रेस”के सञ्चालक श्रीयुक्त महावीरप्रसाद पौदारसे भट हुई। उन्होंने इसे हिन्दीमें प्रकाशित करनेकी अभिलाषा प्रकट की। उनका उत्साह देखकर आनन्द भण्डारने इसके हिन्दी सम्पन्न प्रकाशनका अधिकार उन्हें प्रदान किया। आशा है, हिन्दी प्रेमियोंका इसमें विशेष मनोरञ्जन होगा। दूसरा भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है। मित्राजी सम्मति है कि हिन्दी जनताके ग्राम ग्राम भाव तथा रीति रियाज लेकर भी कुछ भाव व्यक्त किए जायें। मैं आशा पाननकी चक्षुः कर्मिणी।

धीरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

भूमिका



सौभाग्यवश आज मुझे अपने प्रिय मित्र श्रीयुक्त गिरेंद्रनाथ गगोपाध्यायसे हिंदी सप्ताहको परिचित करानेका प्रसन्नता मिली है। भाव प्रदर्शनकी कलामें आपने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की है। आपने भावचित्रों वड़े चापसे देख जाते हैं, उनकी बहुत प्रशंसा हो चुकी है। सचमुच इस विषयमें धीरेन्द्र बाबू अद्वितीय हैं। दर्शक इस भावचित्रालीमें देखेंगे कि एक ही धीरेन्द्र बाबूने कितनी भूमिकाएँ ग्रहण की हैं और किस सफलताके साथ। प्रच्छेद अच्छे समझदार बोला खा जाने हैं, दांतों तले अँगुली दबा लेते हैं, आश्चर्यमें कहते हैं, ऐ ! सच चित्रोंमें एक ही आदर्श है। जी हा, एक हा, तब एक ही है मायाके पटलमें अनेक रूप देख पड़ता है, एक ही मुखासे भिन्न भिन्न प्रकारके आभूषण उने हैं, भगवान एक ही, अवतार भिन्न भिन्न हैं।

धीरेन्द्र बाबूमें यह शक्ति स्वाभाविक—ईश्वरदत्त है। आजकी नहीं—अनेक दिनकी बात है, हम दोनों मित्र कलकत्ता गवर्नमेंन्ट-आर्ट-स्कूलमें चित्रशालाका प्रययन करते थे। उस समय धीरेन्द्र बाबूमें इन भावोंका विकास हो रहा था। आप तरह तरहकी सूत्रों बदलकर भाव दिखाकर हमलागोको हँसाते हँसाते लोटा देते थे। आज उसी मित्रने इस कलामें ऐसी निपुणता और प्रसिद्धि प्राप्त कर ली, अपनी कलाके “उस्ताद” माने जाने लगे, हमका मुझे आनन्दपूर्ण गर्व है।

इन चित्रोंम प्रायः स्वाभाविकता भीमाका पहुँच गयी है। और पत्र पत्रपर कहता है, “एकौह बहुर्यामि” “एकौह बहुग्यामि”। दर्शक मोहित होकर प्राश्न्यमे देखने लगता है। इसमेंके अनेक चित्र उपदेशप्रद हैं, उनसे सुख और शुद्ध आनन्द दोनों प्राप्त होते हैं। अधिकांश चित्र दर्शकोका मनोरञ्जन करेंगे इसमें सन्देह नहीं। भाषामे अनभिज्ञ जनता—अशिक्षित, बच्चे, स्त्रियाँ आदि कनि और लेवकके उच्च भावोंको ग्रहण नहीं कर सकते, पर चित्रोंसे उनका भी मनोरञ्जन होता है और शिक्षा मिलती है। पढ़े लिखे लोग भी किमी पत्र या पुस्तकको उठाकर पहले उसके चित्र ही देखते हैं। यह प्रवृत्ति स्वाभाविक है। इसलिए मनोरञ्जन और शिक्षा कार्यम भी चित्रोंका बहुत कुछ सहायता आवश्यक है।

धारण्ड या बङ्गसमाजके रत्न हैं इसलिये कई भाग उसी समाजकी दृष्टिसे उपस्थित किये गये हैं। फिर भी अधिकांश चित्र हम सब लोगोंके लिये समान भावसे उपयुगी हैं।

दर्शक चित्र देखनेके लिये छठपटा रहे होंग इसलिये यह भूमिका यही समान।

रामेश्वरप्रसाद वर्मा

प्रकाशकका निवेदन



श्रायुक्त श्रीरेन्द्र नाथ गगोपाध्याय और आनन्द भण्डार पब्लिशिंग हाउसके हम अनन्त कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस पुस्तकके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका अधिकार हिन्दी पुस्तक एजेन्सीको सानन्द प्रदान कर कृतार्थ किया । साथ ही हम यू० राय एण्ड सन्सके स्मृत्याधिकारी अपन हितैषी मित्र श्रायुक्त सुमित्रराय चौधरी महाशयके भी कृतज्ञ हैं । उन्होंने इस पुस्तकके हिन्दी संस्करण प्रकाशनका भार हमें दिलानेमें विशेष चेष्टा की है ।

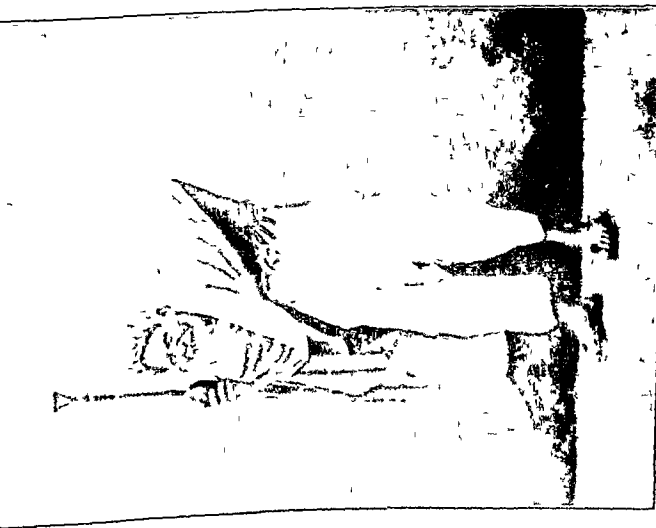
हम विश्वास हैं कि अपने इन मित्रोंकी कृपासे हिन्दी पुस्तक एजेन्सी भविष्यमें अनेक सचिव पुस्तकें हिन्दी पाठकोंका भेट कर सकेगा ।

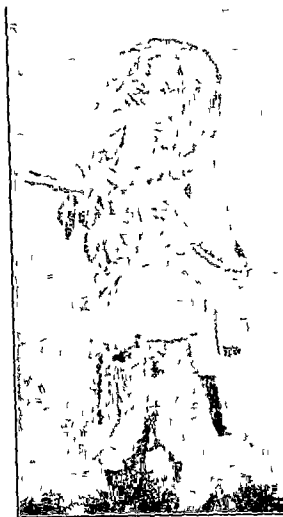
विनोद—

प्रकाशक



ADGAR CHAND BHAIRODAN SETHIA.
JAIN LIBRARY.
NER, RAJPUTANA



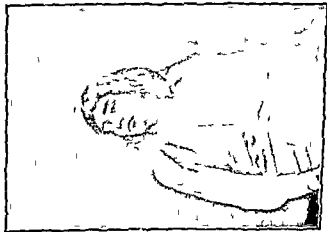
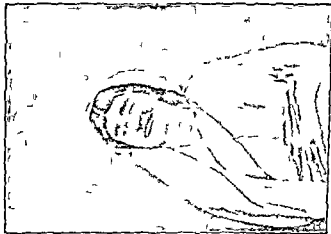
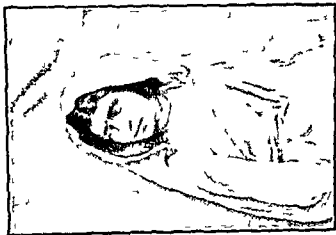


स्मात्तु तस्मात्

विष्णु

गिरिहीमनि

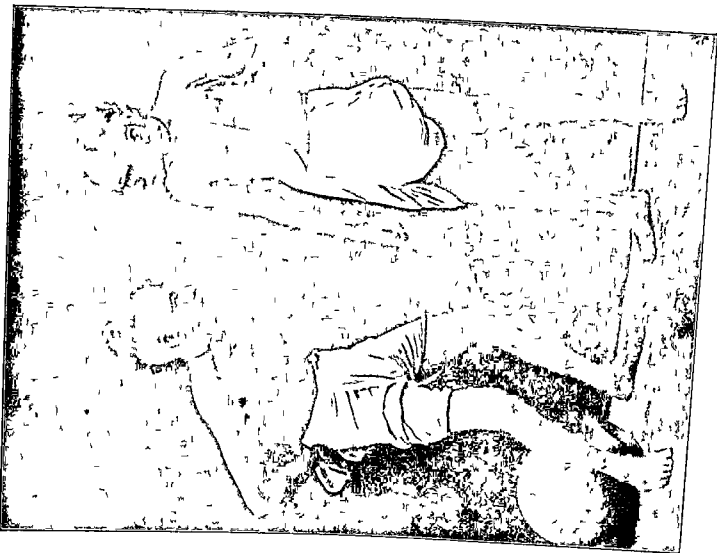
स्मात्तु तस्मात्



गुरु किर्तिमूर्ति

गुरुदेव ! तबि मम गुरु भवतु—लक्षण
व मम मम गुरुदेव ! तबि मम गुरुदेव । लीला
। (गुरुदेव कि मम गुरुदेव । मम गुरुदेव)

गुरुदेव ! मम गुरुदेव । मम गुरुदेव । मम गुरुदेव
(गुरुदेव मम गुरुदेव मम गुरुदेव मम गुरुदेव) मम



नाइ किशिक

नरति केक

रमल नाइ मी रमल नाइ मल



— — — — —

— — — — —

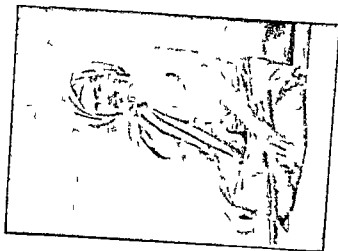


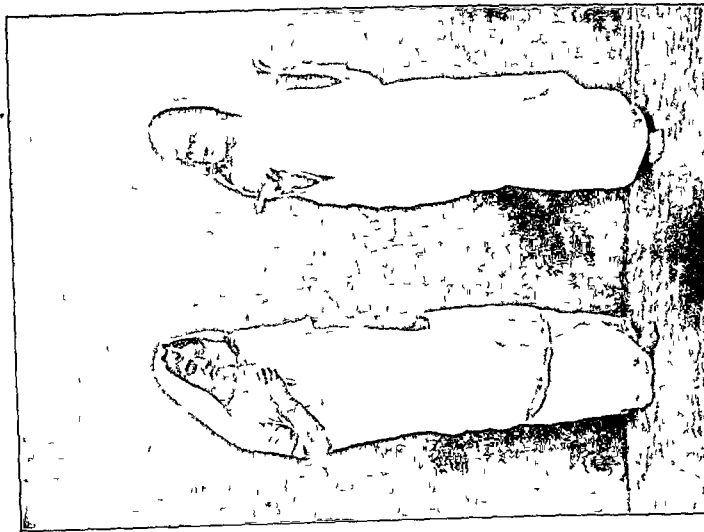
[Handwritten signature]

4. 2











महर्षिदास्य दत्तं

महर्षिदास



ਆਪੀ ਆਸ ਕੇਸ਼

ਅਸੇ ਆਸ ਕਿਸੇਕੁ ਨਾਹ ਅਪੀ ਕੇਸ਼ਾਸਿ ਤਸੇ—ਆਸ

। ਅਪੀਅ ਆਸੀ

ਭ ਸੋਧਾਨੁ ਨਿ ਆਸ ਲਖ ॥ ੧੬੬ ॥ ਆਸ—ਆਸ

। ਸਿੱਧੇ ਭਾਸਿ ਮਖ

(1)



आपनी आत्मा की ओर

१. आपकी आत्मा की ओर किस ओर ध्यान—कि
२. इस ओर आप इस ओर आगामी भव । आत्मा आत्मिक कि
। किंकि न आपकी आत्मा की ओर ध्यान किंकि



आचार्य

एक ही आचार्य



ਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼

ਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਲਿਟਰੇਚਰ

ਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼

ਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼



॥॥ गी॥ ॥॥



आदमीर लुधियाना

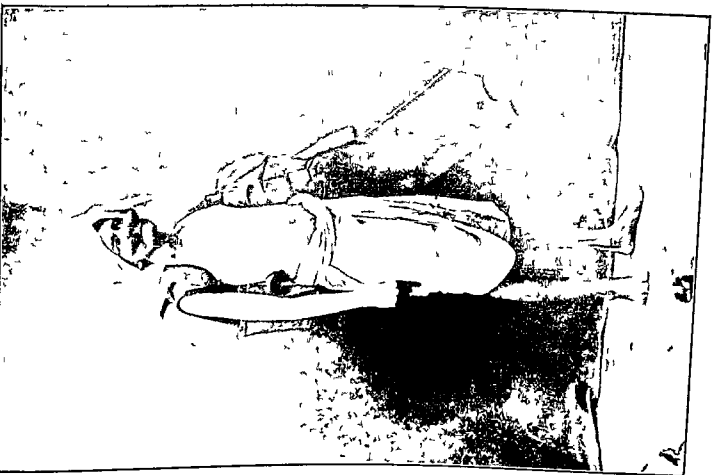
३१ नवंबर १९५५

आदमीर लुधियाना

३१ नवंबर १९५५



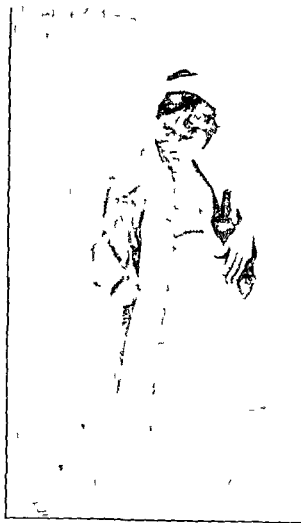
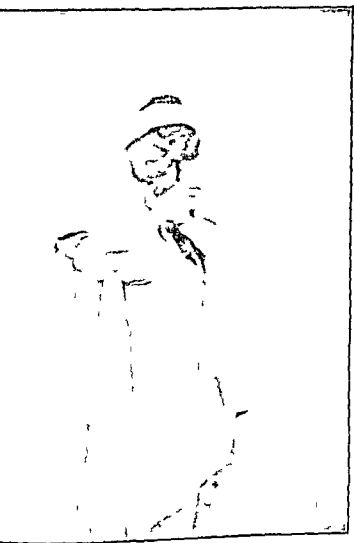
जिम्मा लागवटि



निमः

१० निमः निमः निमः निमः निमः

१० निमः निमः



विषय

विषय विषय विषय

विषय विषय विषय विषय विषय



द्वितीयः

‘हे शिवः प्रकृतः कश्चिन्मिदं हि नन्दनम् ॥’



काष्ठ १५५

काष्ठ



ਅਧਿਕਾਰੀ

ਅਧਿਕਾਰੀ

ਅਧਿਕਾਰੀ



सिद्धि सिद्ध

इहाल्लभ्यं गार्ह्य पाप्म



11111111 11111111

11111111 11111111



ब्रह्म नामाह

(ॐ ह्रीं क्लीं) नमः शिवाय

(ॐ ह्रीं क्लीं) मित्राण्ड्य



ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ

ਨਾਮਲ ਕੀਰਤੀਨੀ ਪਦੀ ਕੀਰਤੀਨੀ , * * * *— ਨਿ
 ਨਾਮਲ ਕੀਰਤੀਨੀ ਨਾਮਲ ਕੀਰਤੀਨੀ ' ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ
 ---ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ

। ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ—ਨਿਰਮਲ
 ' ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ ਨਿਰਮਲ



जागर लक्ष्मिणी

ज. मरुत ३ कि जागर लक्ष्मिणी कर्म ईश्वर
' किमर्ष विना नि किमर्ष

जागर मरुत

' मरुत ३३ जागर मरुत किमर्ष



तगद्व कसरे

॥ ९ ॥ उते मरु कीडेह गोम

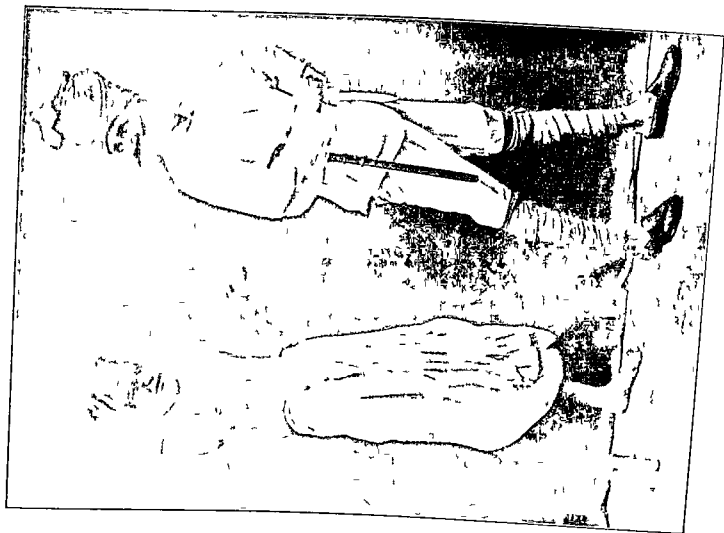
उकसं मरे

॥ मरु मरु कीडेह गोम



ਆਰੰ ਭਿ ਆਰੰ

ਸਿੰਗਰ ਮਨੀ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ
'ੳੳੳੳ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ ਆਰੰ

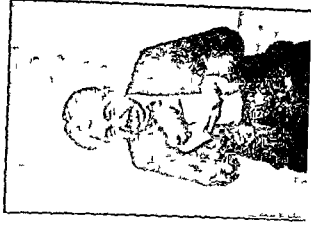


विष्णु

भाग

उत्तरार्ध विष्णु

विष्णु



ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੇ

(ਸਮੇਂ ਪਾਸ)

ਸਮੇਂ ਪਾਸ

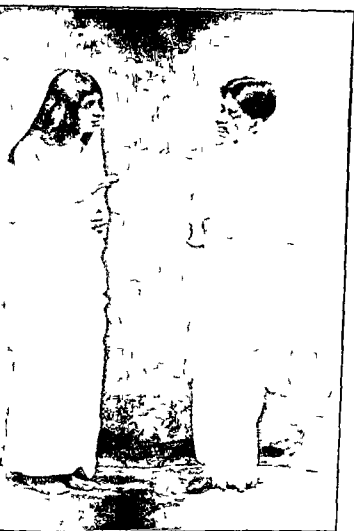
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਸਮੇਂ ਪਾਸ ਸਮੇਂ ਪਾਸ—ਸਮੇਂ
ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ' ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ
ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ' ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ
ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ' ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ
' ' ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ

ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ

(ਸਮੇਂ ਪਾਸ)

ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ

ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ' ਸਮੇਂ—ਸਮੇਂ
' ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ
ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ' ਸਮੇਂ
ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ' ਸਮੇਂ
' ' ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ



आशुतथाजु

(सप्त गणेश)

एष्ट गीत नाम

आशुतथाजु सप्त गणेश नाम त्रि-एष्ट
केन गणेशाय विनामय मा नामा एष्ट । गणेश

आर्ष नाम

(सप्त गणेश)

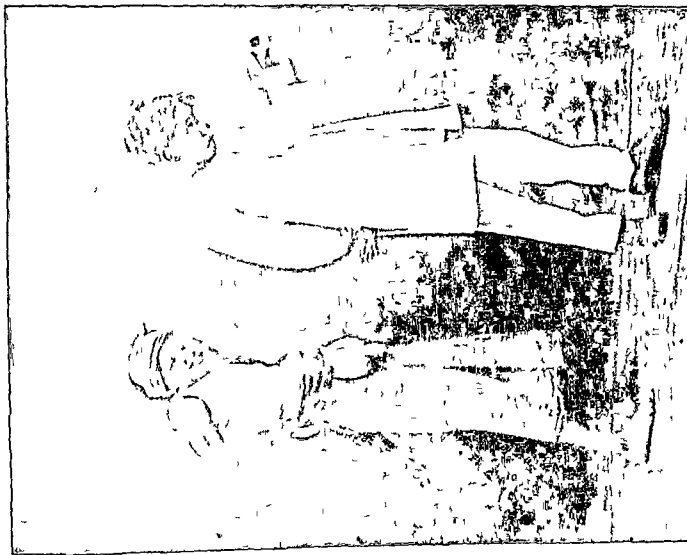
एष्ट गीत नाम

येनैव ईश्वरा मातः आशुतथाजुम उष्टु पुष्ट - १। एष्ट-एष्ट
कथं तं वि श्रुष्ट उष्टु ह आशुतथाजु । ईश्वरा तं वि श्रुष्ट तं
' तं एष्ट आशुतथाजुम

* ईश्वरा तं वि श्रुष्ट आशुतथाजु ह आशुतथाजु-एष्ट
। गीतुष्टु न तं वि श्रुष्ट आशुतथाजु तं वि श्रुष्ट तं



लिफ्फा हि मीरुछा हि हि



ਮੇਰਾ ਨਾਮ

ਮੇਰਾ ਨਾਮ



पिहली किर्नाम नि

जम नमि





नाझाझर सर

धर्म्म लक्ष्मी



कर्मोद्धार हास्य

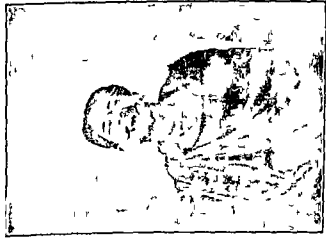


मिडुं

(मीमांसा) . गुरु

गुरु

(मीमांसा) : ४



हाल प्रगति

• एक हास्य



ਮਿਸਟਰ

ਮੇਰੀ ਇਸ ਲਗ ਭੇਜਿ ਜਿਯਾ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ਸਤਿਨਾਮੁ

ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਜਿਹੁ ਏਹੁ ਭਉ ਆ ਕੇ ਭਿਆਨੁ
॥ ਜਿਹੁ ਆਖੈ ਭਉ ਭਿਆਨੁ ਭਿਆਨੁ

॥ ਭੈ ਭਾਗੁ ਭਾਗੁ ਭਾਗੁ ਭੈ ਭੈ ॥ ਭੈ ਭੈ ॥
ਭਾਗੁ ਭਾਗੁ ਭਾਗੁ ਭੈ ਭੈ ਭਾਗੁ ਭਾਗੁ ॥ ਭੈ ਭਾਗੁ ਭਾਗੁ

